Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
June 2024 5(6), 1091–1095

GANDHIAN PHILOSOPHY AND ITS RELEVANCE IN MODERN TIMES

गांधीवादी सिद्धान्त और आधुनिक समय में उसकी प्रासंगिकता

Bhagvati Patel [1], Dr. Kanhaiya Lal Dhurve [2]

[1] Research Scholar, (M.A. History) Rani Durgavati University, Jabalpur (M.P.), India
[2] Research Director, Assistant Professor, Government College Residence (Mandala), (M.P.), India

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.4553

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: Principles are the basic pillars of human knowledge and behaviour, which help in understanding life, organising society and walking on the path of progress. Principle is the fundamental rule or concept of any subject, subject matter or idea, which is systematically and logically proven. It is such a fundamental truth which is considered true on the basis of logic and experience. Principles are equally applicable in all situations and present any knowledge in a systematic and organised form. Principles also inspire new discoveries and ideas and pave the way for their solution by analysing the problems. These principles are of different types such as personal, social, ethical, philosophical, spiritual, scientific etc. When any person or great man propounds some rules or formulas for the purpose of public welfare, common welfare or social reform, then such rules are called personal principles. Such as the principles propounded by Mahatma Gandhi, which are based on the thoughts and philosophy of Gandhiji, which are centered on truth, non-violence, simplicity, self-rule, self-reliance, social justice, and the sambhava of all religions. These principles provide a moral and practical guide for individual and collective life. They provide stability and clarity to a person in his life and prove helpful in taking decisions in difficult situations.

Hindi: सिद्धान्त' मानव ज्ञान और व्यवहार का आधारभूत स्तम्भ होते हैं, जो जीवन को समझने, समाज को संगठित करने और प्रगति के मार्ग पर चलने में सहायता प्रदान करते हैं। ‘सिद्धान्त' किसी भी विषय, विषयवस्तु या विचार का वह मूलभूत नियम या धारणा है, जो व्यवस्थित और तार्किक रुप से प्रमाणित होती है। यह एक ऐसा आधारभूत सच होता है जिसे तर्क और अनुभव के आधार पर सत्य माना जाता है। 'सिद्धान्त' सभी परिस्थितियों में एक समान लागू होते हैं तथा किसी ज्ञान को व्यवाधित और संगठित रूप में प्रस्तुत करता है। 'सिद्धान्त नई खोजों और विचारों को भी प्रेरित करते है एवं समस्याओं का विश्लेषण करके उनके समाधान का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं। ये सिद्दान्त विभिन्न प्रकार के होते हैं जैसे- व्यक्तिगत, सामाजिक नैतिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक आदि ।
जब कोई व्यक्ति या महापुरुष जनकल्याण, समान कल्याण या समाजसुधार के उद्देश्य से कुछ नियमों या सूत्रों का प्रतिपादन करता है तो ऐसे नियम ही व्यक्तिगत सिद्धान्त कहलाते है। जैसे महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित सिद्दान्त जो गोधी जी के विचारों और दर्शन पर आधारित है जो सत्य, अहिंसा, सरलता, स्वराज आत्मनिर्भरता, सामाजिक न्याय प्रथा सर्वधर्म सम्भाव पर केंद्रित हैं। ये सिदान्त व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन के लिए एक नैतिक और व्यवहारिक मार्गदर्शन प्रदान करते है। ये व्यक्ति को अपने जीवन में स्थिरता और स्पष्टता प्रदान करते है एवं कठिन परिस्थितियों में निर्णय लेने में सहायक सिद्ध होते हैं।

1. प्रस्तावना

1.1. भूमिका

'सिद्धान्त' मानव ज्ञान और व्यवहार का आधारभूत स्तम्भ होते हैं, जो जीवन को समझने, समाज को संगठित करने और प्रगति के मार्ग पर चलने में सहायता प्रदान करते हैं। ‘सिद्धान्त' किसी भी विषय, विषयवस्तु या विचार का वह मूलभूत नियम या धारणा है, जो व्यवस्थित और तार्किक रुप से

प्रमाणित होती है। यह एक ऐसा आधारभूत सच होता है जिसे तर्क और अनुभव के आधार पर सत्य माना जाता है। 'सिद्धान्त' सभी परिस्थितियों में एक समान लागू होते हैं तथा किसी ज्ञान को व्यवाधित और संगठित रूप में प्रस्तुत करता है।

'सिद्धान्त नई खोजों और विचारों को भी प्रेरित करते है एवं समस्याओं का विश्लेषण करके उनके समाधान का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं। ये सिद्दान्त विभिन्न प्रकार के होते हैं जैसे- व्यक्तिगत, सामाजिक नैतिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक आदि ।

जब कोई व्यक्ति या महापुरुष जनकल्याण, समान कल्याण या समाजसुधार के उद्देश्य से कुछ नियमों या सूत्रों का प्रतिपादन करता है तो ऐसे नियम ही व्यक्तिगत सिद्धान्त कहलाते है। जैसे महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित सिद्दान्त जो गोधी जी के विचारों और दर्शन पर आधारित है जो सत्य, अहिंसा, सरलता, स्वराज आत्मनिर्भरता, सामाजिक न्याय प्रथा सर्वधर्म सम्भाव पर केंद्रित हैं। ये सिदान्त व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन के लिए एक नैतिक और व्यवहारिक मार्गदर्शन प्रदान करते है। ये व्यक्ति को अपने जीवन में स्थिरता और स्पष्टता प्रदान करते है एवं कठिन परिस्थितियों में निर्णय लेने में सहायक सिद्ध होते हैं।

2. गांधीवादी सिद्धांत:एक परिचय

गांधीवादी सिद्दान्त भी कोई विशिष्ट धार्मिक प्रणाली या पूजा पद्धत्तियों तक संकुचित नहीं थे अपितु वे नैतिक और आध्यात्मिक जीवन दर्शन का स्वरूप थे जो सत्य, आहिंसा और आत्मनिर्भरता तथा जनकल्याण के मूल्यों और सिद्धान्तों पर आधारित थे। गांधी जी सदैव कहा करते थे कि "सिद्धान्त कोई तात्विक या धार्मिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह जीवन के हर कार्य में सही मार्ग पर चलने की एक नैतिक दिशा है। और सच्चा धर्म वही है जो व्यक्ति को आत्मशुद्धि की दिशा में प्रेरित करता हो । इस प्रकार गांधीवादी सिद्धान्त केवल आध्यात्मिक या धार्मिक अनुष्ठान न होकर जीवन को नैतिक दृष्टिकोण से जीने का एक तरीका था जो जीवन के प्रत्येक पहलू में इसका पालन करने से जुड़ा था। इन सिद्धान्तों में सत्य, अहिंसा, दया, प्रेम, करुणा सहिष्णुता तथा नैतिकता का समावेश था फलतः ये सभी के लिए सर्वग्राही और सर्व स्वीकार्य थे।

गांधीवादी सिद्धान्त किसी मूल सम्प्रदाय, लिंग अथवा जाति आधारित नहीं थे । गांधीजी एक कर्मयोगी थे और जीवन, समाज, राष्ट्र आदि के लिए उन्होने जो मूल्य निर्धारित किये और यही मूल्य गांधीवादी सिद्दान्त कहलाएं जो गांधीवादी दर्शन का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय है। यद्यपि उन्होंने किसी दर्शन या वाद की स्थापना उस तरीके से नहीं की जैसे-कार्लमार्क्स, रुसो, ग्रीन या मिल जैसे दार्शनिकों ने की थीं। इस सम्बन्ध में मार्च 1936 में सावली सेवा संघ में अपने प्रवचन में गांधी जी ने कहा था कि-"गांधीवादी नाम की कोई बस्तु नहीं है। मैं अपने बाद कोई सम्प्रदाय नहीं छोड़ना चाहता, मैं किसी नये सिदान्त या मत को चलाने का दावा भी नहीं करता, मैने तो केवल अपने ढंग से आधारभूत सच्चाईयों को अपने नित्य के जीवन एवं समस्याओं पर लागू करने का प्रयास किया और ये सिद्धान्त ही मेरा धर्म हैं।

3. प्रमुख गांधीवादी सिद्धांत

गांधीवादी दर्शन में अनेक सिद्धान्तों नैतिक मूल्यों तथा मानकों का समावेश है जैसे सत्य, अहिंसा, सामाजिक समानता तथा अस्प्रय्यता उन्मूलन, धार्मिक सहिष्णुता, स्वराज, आत्मनिर्भरता, सेवा, सर्वधर्म सम्भाव, करुणा, प्रेम, सादा जीवन, ट्रस्टीशिप. तथा नैतिक मूल्य आधारित राजनीति आदि। ये सिद्धान्त न केवल तत् परिस्थितियों में व्यवहारिक व उपयोगी थे अपितु वर्तमान परिस्थितियों में इनका महत्व और उपयोगिता और बढ़ गई है।

'सत्य' गांधीवादी सिद्धान्तों का एक महत्वपूर्ण और मूलभूत तत्व था। उनका मत था कि सत्य केवल बातों और वार्तालाप में ही नही अपितु कार्यों और विचारों में भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होना चाहिए । उन्होंने सत्य को आत्म अनुभव और आत्मपरीक्षण का सटीक, स्पष्ट और विश्वसनीय मार्ग माना है। गांधी जी के अनुसार • सत्य ही ईश्वर है और ईश्वर ही सत्य है।" अर्थात् सत्य एक उच्चत्तर नैतिक और आध्यात्मिक सिद्धान्त है जिसे उन्होने ईश्वर के समान माना है। सत्य किसी एक धर्म, व्यक्ति या देश तक सीमित न होकर सार्वभौमिक और सर्वव्यापी है जिस पर सभी का पूर्ण अधिकार है। वे जीवन के हर क्षेत्र में सत्य को अपनाने पर जोर देते थे। वे मानते थे कि सत्य की निरंतर खोज की जानी चाहिए क्योंकि इसकी खोज से व्यक्ति को आत्मिक शांति तथा समाज को नैतिकता तथा न्याय का मार्ग मिलता है। इस प्रकार गाँधी जी का सत्य उनके विचारों, कार्यों तथा आदर्शों का मूल तत्व और प्राण था।

'अहिंसा' गांधीवादी सिद्धान्तों का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू था। जिसे वे केवल शारीरिक क्षेत्र तक सीमित न मानते हुए उसके मानसिक और भावनात्मक उपयोग को भी अवश्यमभावी मानते थे। उन्होने अहिंसा को केवल बाहरी संघर्ष ही नहीं अपितु आंतरिक शाँति और संतुलन प्राप्ति का एक विशिष्ट मार्ग माना जो सत्य, प्रेम. और करुणा पर आधारित था। वे अहिंसा की कायरता नहीं बाल्क साहस का प्रतीक मानते थे तथा इसे व्यक्तिगत जीवन के साथ-साथ सामाजिक और राजनीतिक जीवन में लागू करने की वकालत की। अहिंसा का व्यापक प्रयोग महात्मा गांधी ने भारतीय स्वाधीनता प्राप्ति हेतु चलाये गये विभिन्न आन्दोलनों (जैसे असहयोग आन्दोल सविनय अवज्ञा या दांडी मार्च; भारत छोड़ो आन्दोलन आदि) में व्यापक रुप से किया।

उनके 'सत्य' और 'अहिंसा' के सिद्धान्तों के सृजन की जड़ें एक ओर जहाँ प्राचीन भारतीय ग्रंथों से जुडी हैं, वही दूसरी ओर उनका विकास जैन और बौद्ध दर्शन से हुआ हैं,। गांधी जी के इन्ही सत्य और अहिंसा के विचारों ने न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु वैश्विक स्तर पर नेल्सन मंडेला, मर्टिन लूथर किंग जूनियर, तथा दलाईलामा जैसे सुधारको को भी प्रेरित किया।

गांधीवादी सिद्दान्त सामाजिक समानता तथा न्याय के मूल्यों से भी जुड़े हैं। उन्होंने हुआछूत, जातिप्रया तथा हरिजनोद्वार हेतु आवाज उठाई तथा समाज में समानता की स्थापना हेतु कदम बढ़ाये । वे मानते थे कि इन सिद्धान्तों का पालन केवल व्यक्ति की आत्मा की शुद्दि के लिए नही अपितु समाज में शांति और समानता स्थापित करने के लिए भी करना चाहिए। महात्मां गांधी ने सामाजिक समानता के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये जैसे - हरिजन आन्दोलन, अछूतों को 'हरिजन' (ईश्वर के बच्चे) कहकर पुकारना, 1932 के पूना पैक्ट के तहत हरिजनों के लिए आरक्षित सीटों की व्यवस्था, जाति प्रथा का विरोध, महिला अधिकारों की रक्षा, हिन्दु मुस्लिम एकता हेतु खिलाफत आन्दोलन (1920) का समर्थन; श्रमिक तथा किसान आन्दोलनों का नेतृत्व जैसे चंपारण (1917) अहमदाबाद मिल (1918) तया खेडा सत्याग्रह (1918), ग्राम स्वराज तथा आर्थिक समानता आदि। इस प्रकार जाति, धर्म और लिंग के भेदभाव को समाप्त करने के लिए गांधीवादी सिद्दान्त आज भी प्रासंगिक है।

गाँधी जी मानते थे कि सभी धर्मों में सत्य और अच्छाई का तत्व होता है, अतः सभी धर्मों का आदर और सम्मान होना चाहिए इसलिए गाँधी जी ने सर्वधर्म सम्भाव' को अपने सिद्धान्तों का आदर्श बनाया। दुनिया भर में बढ़ रहे धार्मिक संघर्षों और असिहत्णुता के माहौल में गाँधी जी का 'सर्वधर्मसम्भाव' का सिद्दान्त सभी धर्मी के बीच सामंजस्य स्थापित करने में महत्वपूर्ण है। फलतः सर्वधर्म सम्भाव' का सिद्धान्त सामाजिक सौहार्द, धार्मिक सहिष्णुता और शांति का मूल मंत्र सावित हुआ ।

आत्मनिर्भरता भी गांधीवादी सिद्धान्तों का एक महत्वपूर्ण भाग था। जिसके तहत उन्होने समाज को स्वदेशी उपयोग तथा विदेशी वस्तुओं के वहिष्कार हेतु प्रेरित किया ताकि औपनिवेशिक शक्तियों पर निर्भरता कम हो और देश आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हो सके। उनका मानना था कि आत्मनिर्भरता न केवल भौतिक रुप में बल्कि मानसिक और आत्मिक रूप में भी होनी चाहिए फलतः उन्होने स्वावलम्बी जीवन जीने के लिए प्रेरित किया आत्मनिर्भरता तथा स्वदेशी हेतु गांधी जी ने व्यापक प्रयास किये जैसे स्वदेशी आन्दोलन, चरखा तथा खादी का उपयोग (1920 में अखिल भारतीय खादी ग्रामोधोग संघ की स्थापना), ग्राम स्वराज की अवधारणा, ग्रामीण उद्योगों को बढावा, असहयोग आन्दोलन 1920 (स्वदेशी अपनाओं तथा विदेशी वहिष्कार) ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त तया शिक्षा में आत्मनिर्भरता हेतु 'नई तालीम" नामक शिक्षा प्रणाली की शुरुआता आदि।

'सेवा' भी गांधीवादी सिद्धान्तों का एक महत्वपूर्ण पहलू है। जिसके फलस्वरुप उन्होंने सामाजिक सेवा और मूल्यआधारित कार्यों को महत्वपूर्ण माना । सत्याग्रह एवं नम्रता के द्वारा उन्होंने लोगों को कमजोर वगों की सेवा हेतु प्रेरित किया । गाँधी जी मानते थे कि सभी धर्म मानवकृत है, अतः उनमें त्रुटियां भी है जिन्हे दूर किया जाना चाहिए। क्योंकि दुनियां के सभी धर्मों की आधारभूत शिक्षाएं तो प्रेम, भाईचारा तथा सेवा ही सिखाती है। महात्मा गांधी लाओत्से तुंग तथा कोफ्यूशियस की शिक्षाओं से बहुत प्रभावित थे। इसी प्रकार उन्होंने क्षमा करना बाइबिल से तथा लोगों के साथ समानता और भाईचारे की सीख इस्लाम धर्म से ली।

गाँधी जी मानते थे धर्म और राजनीति अलग नहीं हो सकते अतः राजनीति में धर्म और नैतिकता का पालन किया जाए तो समाज में न्याय और शांति व्यवस्था स्थापित हो सकती है। राजनीति का आध्यात्मिकरण गांधी जी की सबसे बडी देन थी जिसे उन्होने छल, छदम और हिंसा से ऊंचा उठाकर निस्वार्थ लोक सेवा और नैतिकता का स्तर प्रदान किया एक संत राजनीतिज्ञ के रूप में उन्होंने सदैव यही चाहा कि राजनीति से विग्रह, विघटन, विद्रोह तथा विनाशमूलक प्रवृत्तियों का अंत हो और सद्भावना एवं सहयोग के तत्त्वों का समावेश हो

महात्मा गांधी ने धर्म का मानवीकरण एवं समाजीकरण किया क्योंकि उनका मानना था कि धर्म की आराधना के लिए किसी गुफा या पर्वत पर जाने की आवश्यकता नही अपितु धर्म की प्राप्ति तो स्वयं की आत्मा को जानने से ही संभव है, जिसकी अभिव्यक्ति हमारे जीवन कार्या से होनी चाहिए।

गांधी जी ने आध्यात्मिक विकास और आत्म-शुद्धि को भी धर्म से जोडा ताकि व्यक्ति अपने जीवन में प्रार्थना, ध्यान तथा साधना आदि के माध्यम से अपने भीतर के सत्य को समझ सके। गांधी जी एक आध्यात्मिक व्यक्ति थे और उनकी इसी आध्यात्मिक और सत्य की शक्ति ने उन्हें राष्ट्रवादी राजनीति में देश की सेवा हेतु सक्रिय किया।

गाँधी जी ने कमजोर और आर्थिक रुप से असमर्थ लोगों की सेवा हेतु भी प्रयास किये तथा ट्रस्टीशिप' के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इस सिद्धान्त के तहत उनका मानना था कि धनवान व्यक्ति समाज के प्रति एक ट्रस्टी (संरक्षक) की तरह कार्य करें तथा अपनी सम्पत्ति और संसाधनों का उपयोग जनकल्याण हेतु करें। इस प्रकार गांधी जी का यह ट्रस्टीशिपं एक आर्थिक और सामाजिक सिद्दान्त है, जिसका उद्देश्य समाज में आर्थिक समानता और न्याय स्थापित करना है।

4. गांधीवादी सिद्धांत: वर्तमान में प्रासंगिकता

गांधीवादी सिद्दान्त सिर्फ अतीत का हिस्सा नहीं हैं, बल्कि वर्तमान समय में भी उनकी प्रासंगिकता उतनी ही महत्वपूर्ण है विशेष रुप से जिस दौर में हम सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक उथल पुथल देख रहे है। इस प्रकार आज इन सिद्दान्तों की व्यापक और महती उपयोगिल्ला है। ध्यातव्य है कि गांधीवादी सिद्धांत सत्य, अहिंसा, स्वराज, दया, करुणा, प्रेम, सरल जीवन समानता तथा नैतिकता पर आधारित है जो वर्तमान के विभिन्न क्षेत्रों यथा सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा व्यक्तिगत संदर्भ में व्यापक रूप से प्रासंगिक हैं क्योंकि यह जीवन और समाज की कई जटिल व उलझी हुई समस्याओं का समाधान प्रदान करता है।

आज जब राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय तथा वैश्विक समाज में साम्प्रदायिकता, धार्मिक असहिष्णुता तथा उन्माद बढ रहा है तो ऐसे में गांधी जी का "सर्वधर्म सम्भाव' का सिद्दान्त साम्प्रदायिक सौहार्द और अनेकता में एकता को बढाकर समाज को जोडने का कार्य कर सकता है। उनका विचार है कि सभी धर्म

सत्य के अलग-अलग मार्ग है, ऐसे में सत्याग्रह और अहिंसक प्रतिरोध का उनका सिद्दान्त धार्मिक संघर्षो को कम करने और सामाजिक एकता स्थापित करने में सहायक है, जो वैश्विक शांति की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करता है।

आधुनिक राजनीति में छल-कपट, हिंसा, विग्रह विघटन, विद्रोह तथा विनाशमूलक प्रवृत्तियां देखने को मिलती है तथा नैतिकता व ईमानदारी जैसे आदर्शों का अभाव दृष्टिगोचर होता है साथ ही राजनीति में धर्म का दुरुपयोग भी बढ़ रहा है ऐसे में ये गांधीवादी सिद्दान्त राजनीति को नैतिक रूप से मार्गदर्शन प्रदान कर सकते है क्योंकि ये सिद्धान्त सत्य, अहिंसा और नैतिकता पर आधारित हैं।

आज विश्व में हिंसा, युद्ध और आतंकवाद जैसी गंभीर समस्याएँ विद्यमान है और पूरी दुनिया इन चुनौतियों से जूझ रही है ऐसे में गांधी जी के अहिंसा, सत्याग्रह, शांति और सहअस्तित्व का सिद्धान्त दुनिया को मार्गदर्शन प्रदान कर शांति और सौहार्द बनाये रखने में सहायक हो सकते हैं।

वर्तमान समाज जातिवाद, छुआछूत, वर्गभेद रंगभेद जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। गांधी जी का सपना एक समतावादी समाज का था, जहां जाति, धर्म, लिंग आदि के आधार पर भेदभाव न हो। वर्तमान में भी व्यापक स्तर पर ये चुनौतिया विद्यमान है जिन्हे गांधीवादी विचारों और सिद्धान्तों के माध्यम से हल किया जा सकता है। उनका 'हरिजन आन्दोलन' तथा जातिगत भेदभाव को समाप्त करने का प्रयास आज भी प्रासंगिक है।

वर्तमान परिवेश में आधुनिक जीवन शैली तथा भोग-विलास की बढ़ती हुई प्रवृत्तियों के कारण वैश्विक तापन, जलवायु परिवर्तन, भूमि, वायु, जल, मृदा प्रदूषण, वर्षा की अनियमितता, वनोनमूलन जैसी विभिन्न प्रकार की पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं ऐसे में गाँधी जी का "सादा जीवन उच्च विचार " आज के उपभोक्तावादी समाज में पर्यावरणीय संकट को कम करने में उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं। उनका प्रकृति के साथ सामंजस्य वादी दृष्टिकोण तथा प्राकृतिक संसाधनों का सीमित उपयोग स्थाई विकास का मार्ग दिखा सकता है।

आज वैश्वीकरण के दौर में गांधी जी का आत्मनिर्भरता तथा स्वदेशी का सिद्धान्त अत्यन्त महत्वपूर्ण है । 'मेक इन इण्डिया' तथा 'वोकल फॉर लोकल' जैसी नीतियां गांधीवादी सिद्धान्तों से प्रेरित हैं जो स्थानीय उद्योगों को बढावा देने पर बल देती है

गांधी जी ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था और स्वराज का समर्थन किया था। जो वर्तमान में कहीं अधिक प्रासंगिक है। आज भी सतत विकास के लिए विकेन्द्रीकरण और स्थानीय स्वशासन को मजबूत करने की आवश्यकता है ताकि ग्रामीण भारत सशक्त बन सके। ऐसे में ये गांधीवादी सिद्धान्त व्यापक मार्गदर्शन प्रदान करते है।

गांधीवादी सिद्दान्त आज व्यक्तिगत और सामूहिक विकास का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं। जिसमें आत्म-अनुशासन, आत्मशुद्धि तथा सेवा को महत्व दिया गया है। आज के उपभोक्तावादी और आत्मकेंद्रित समाज में यह दृष्टिकोण आत्मविकास और समाज तथा राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी को बढावा देने का एक प्रमुख मार्ग है।

आधुनिक युग में गाँधी जी के सिद्धान्तों का उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में नैतिकता एवं मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए भी किया जा सकता है ताकि युवा पीढ़ी को सत्य, अहिंसा, सेवा, देशप्रेम, राष्ट्रसेवा और नैतिकता जैसे सिद्दान्तों हेतु प्रेरित किया जा सके।

5. आलोचनात्मक मूल्यांकन

इस प्रकार गांधीवादी सिद्धान्त आज भी नैतिकता आध्यात्मिकता, तथा समाज सुधार के संदर्भ में अत्यन्त प्रासंगिक हैं क्योंकि ये सिद्धांत आदर्शवादी व नैतिक थे जो सत्य, अहिंसा और सेवा पर आधारित थे। उनके सिद्धान्त भारतीय समाज तथा विश्व राजनीति में सकारात्मक बदलाव लाये और आज भी इनका अनुसरण किया जाता है। यद्यपि कुछ गांधीवादी सिद्धान्तों को लेकर कुछ आलोचनाएं भी हुई जैसे उनकी कठोर अहिंसा की नीति, हिन्दू धर्म के प्रति पक्षधरता, आध्यात्मिकता का राजनीति में मिश्रण, कुछ सिद्दान्तों का व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में व्यवहारिक न होना आदि। फिर भी गांधी जी की देन को इन आलोचनाओं के आधार पर नकारा नही जा सकता क्योंकि उनके सिद्धान्तों ने भारतीय समाज को एक नयी दिशा प्रदान की है। तथापि उनके सिद्धान्तों को आधुनिक संदर्भ में व्यवहारिक रुप से लागू करने के लिए नये दृष्टिकोण और बदलावों की आवश्यकता है। उनके आलोचक भी उनके उस आदर्शों और सिदान्तों की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सके जैसे डॉ भीमराव अंबेडकर जी ने कहा था- " यद्यपि मैं जाति प्रथा और छुआछूत के मुद्दों पर उनके दृष्टिकोण से असहमत हूं, किन्तु उनके विचार भारतीय समाज में सुधार के लिए महत्त्वपूर्ण है।" संक्षेपतः उनके आदर्शों और सिद्धान्तों को जीवन में अपनाने से समाज में शांति और सद्भाव बढ़ाया जा सकता है ।

6. निष्कर्ष

सारक्षेप यह है कि महात्मा गांधी २० वी सदी के युग पुरुष थे जिन्होने व्यक्ति की गरिमा एवं आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाने तथा मानव कल्याण हेतु अपने सिद्धान्तों के माध्यम से सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, ग्राम स्वराज, सामाजिक समानता, मानवतावादी धर्म तथा राजनीति के आध्यात्मीकरण जैसे महान विचार दिये जिससे सम्पूर्ण मनुष्य जाति सदियों तक प्रेरणा एवं प्रकाश ग्रहण करती रहेगी । वर्तमान में गांधीवादी सिद्धान्तों का उपयोग एक शांतिपूर्ण नैतिक और सतत समाज बनाने के लिए किया जा सकता है। उनके सिद्धान्त केवल एक ऐतिहासिक परम्परा नहीं है बल्कि आज की 'जटिल समस्याओं का समाधान भी प्रदान करते हैं

सन्दर्भ सूची

गांधी एम. के. : आत्मकथा नवजीवन ट्रस्ट्, अहमदावाद 1951

चौधरी चरण सिंह : भारत की आर्थिक नीति -गांधीवादी रुपरेखा 1977, राधाकृष्ण, नई दिल्ली

अग्रवाल अलका एवं शिखा: गाँधी दर्शन विविध आयाम प्रथम संस्करण, जयपुर 1999

द सिलेक्टेड वर्क आफ महात्मा गाँधी :- संपादक - नारायण श्रीमन खण्ड-4 नवजीवन पब्लिशिंग हाउस् अहमदावार, 14 वा संस्करण 1968.

गांधी एम. के. → Non-violence in Peace and war. Vol- I नवजीवन पब्लिसिंग बाऊस अहमदावाद । → हिंद स्वराज (इंडियन होमरूल) - द इन्टरनेशनल प्रिंटिंग प्रेस फीनिक्स नेटाल 1909

ब्राउन एम जूडिथ गांधी : प्रिजनर आफ होप - Yale Univ. Print. 1991 लंदन

कामथ एम० वी० Gandhi: A Spiritual Journey - Indus Source publication Mumbai, 2007 ISBN 9788188569113

Tidrick kathryn Gandhi: A political and Spiritual life - Verso Books Publication New York 2013 ISBN 9781781682395

नटनी प्रकाश नारायण गांधी दर्शन मीमांसा - Pointer Publishers प्रकाशन, जयपुरISBN 9788188559411

-नाथ मीता - रिलीजन एण्ड विलीफ - विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली 2017 ISBN 9789385539169

विवेक रामलाल - महात्मा गांधी : जीवन और दर्शन - पंचशील प्रकाशन, जयपुर 1996 ASIN BO8KS3TJZ8

Rola Roma - महात्मा गांधी : जीवन और दर्शन (अनुवादक - प्रफुल्लचंद ओझा मुक्त) - लोकभारती प्रकाशन प्रा.लि इलाहवाद, छठा संस्करण 1998

Gandhi Arun: The Gift of Anger - पेंगुइन प्रकाशन, दिल्ली ISBN-0718187512

राठौड़ विमला, राठौड़ पी वी : लाईफ एण्ड बर्क्स आफ महात्मा गाँधी - करेंट पब्लिकेशन, दिल्ली ISBN 9788189065 300

राधाकृष्णन सर्वपल्ली - Mahatma Gandhi: Essays & Reflection - Jaico publishing House, Delhi ASIN 2013 B008JZORBY

देसाई महादेव The Gospel of Selfless Action OR The Gita according to Gandhi - Dry Bones Publication Press ISBN-1883938716 2000

Parekh, Bhikhu C. (2001). Gandhi: a very short introduction. Oxford University Press. p. 7. ISBN 978-0-19-285457-5.

https://www.britannica.com/biography/Mahatma-Gandhi

https://www.mkgandhi.org/articles/journals-by-Mahatma-Gandhi.php

https://www.gandhiheritageportal.org/journals-by-gandhiji

https://journals.lww.com/ijmr/fulltext/2019/49001/life_of_m_k__gandhi__a_message_to y outh_of_modern.20.aspx

https://globalgandhi.in/